[This question paper contains 4 printed pages.]

(23) Your Roll No. 2023

Deshbandhu College, Kalkaji, New Delhi — LIBRARY

D

Sr. No. of Question Paper : 3012

Unique Paper Code : 2052101001

Name of the Paper : Hindi Kavita: Aadikal Evam Nirgunbhakti Kavya

हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi : DSC-1**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।
2. इस प्रश्न पत्र में दो पृष्ठ है ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) संगहें पान कम्मान राज। उब्भरे अंग अंतर बिराज ।।

आलिंग बुंबि उर चंपि अप्प। बद्धेव तेज तामंस दप्प ।।

कर धरे से धनु आनंद चित्त। बिछुर्यै मिल्यौ चिरकाल मित्त ।।

कम्मान राज मिलि तेज ताय। अरिझिबिटि मिलिमनु सहाय ।।

P.T.O.

अथवा

देख-देख राधा-रूप अपारा ।
अपरुब के विहि आनि मिलाओल खिति तल लाबनि-सार ।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर ।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर ।
कत-कत लखिमी चरण-तल नेओछए रंगिनि हेरि विभोरि ।
करु अभिलाख मनहि पद-पंकज अहोनिसि कोर अगोरि ।

(ख) मूवाँ पीछै जिनि मिलै, कहै कबीरा राम ।
पाथर घाटा लोह सब, (तब) पारस कौंणें काम ।।
इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूं जीव ।
लोही सींचौ तेल ज्यूँ, कब मुख देखौं पीव ।।

अथवा

कहा नर गरबसि थोरी बात ।
मन दस नाज टका दस गंठिया, टेढौ टेढौ जात ।।टेक।।
कहा लै आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात ।।
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूं बनि हरियल पात ।।
राजा भयौ गांव सौ पाये, टका लाख दंस ब्रात ।।
रावन होत लंका को छत्रपति, पल मैं गई बिहात ।।
माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले संगात ।।
कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात ।।

(ग) खेलत मानसरोवर गईं। जाइ पाल पर ठाढ़ी भईं।।
देखि सरोवर हँसै कुलेली। पदमावति सों कहहिं सहेली।।
ए रानी! मन देखु विचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।।
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनव काली। कित हम, कित यह सरवर-पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरै देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह।।

अथवा

कहा मानसर चाह सो पाई। पारस-रूप इहाँ लगि आई।।
भा निरमल तिन्ह पायँन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे।।
मलय-समीर बास तन आई। भा सीतल, गै तपनि बुझाई।।
न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य-दसा भै पाप गँवावा।।
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना।।
बिगसा कुमुद देखि ससि-रेखा। भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा।।
पावा रूप रूप जस चहा। ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा।।
नयन जो देखा कवँल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोति नग हीर।।

2. "बानबेध समय" का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

"बानबेध समय" के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. विद्यापति भक्त अथवा शृंगारिक कवि हैं, तर्क सहित उत्तर दीजिये। (14)

अथवा

विद्यापति की काव्य-भाषा पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

4. कबीर का काव्य "आँखिन देखी पर आधारित है, कागद लेखी पर नहीं", इस कथन के आलोक में कबीर-काव्य की समीक्षा कीजिए। (14)

अथवा

कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

5. "जायसी प्रेम की पीर के कवि हैं", इस कथन के आधार पर जायसी की प्रेम भावना का विवेचन कीजिए। (14)

अथवा

सूफी काव्य परम्परा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिये।

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) विद्यापति का राधा-रूप वर्णन

(ख) "गुरुदेव कौ अंग" का प्रतिपाद्य

(ग) "मानसरोदक" खंड का काव्य-सौंदर्य

[This question paper contains 2 printed pages.]

(24) Your Roll No. ....

DESHBANDHU COLLEGE
2023
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi

D

Sr. No. of Question Paper : 3042

Unique Paper Code : 2052101102

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Adikal Evam Madhyakal) (DSC-2)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।**

1. हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

अथवा

आदिकाल के नामकरण पर विभिन्न आलोचकों के मत स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. आदिकालीन हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

रासों काव्य की प्रामाणिकता पर अपने विचार लिखिए।

3. भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

निर्गुण काव्यधारा की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4. रीतिकालीन साहित्य की परिस्थितियों का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध काव्य-परंपरा का परिचय दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (10+10+10=30)

(क) सिद्ध साहित्य

(ख) लौकिक साहित्य

(ग) कृष्ण भक्ति काव्यधारा

(घ) वीर काव्य

(ङ) नीति काव्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

(25) Your Roll No. 2023

... COLLEGE LIBRARY ... New Delhi

D

Sr. No. of Question Paper : 3067

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना जड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जर्मनों को अकेला मार कर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े-संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं, और

पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था- चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो...।

(ख) आसिन-कातिक के भोर में छा जानेवाले कुहासे से हिरामन को पुरानी चिढ़ है। बहुत बार वह सड़क भूलकर भटक चुका है। किन्तु आज के भोर के इस घने कुहासे में भी वह मगन है। नदी के किनारे धान-खेतों से फूले हुए धान के पौधों की पवनिया गंध आती है। पर्वपावन के दिन गाँव में ऐसी ही सुगंध फैली रहती है। उसकी गाड़ी में फिर चंपा का फूल खिला। उस फूल में एक परी बैठी है।... जै भगवती!

(ग) गजाधर बाबू बैठकर चाय और नाश्ते का इंतजार करते रहे। उन्हें अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गरम-गरम पूरियाँ और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते, उनके लिए जलेबियाँ और चाय ला कर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, काँच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब, पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई। पैसेंजर भल्ने ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुंचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।

(घ) सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी थी, जिसमें पैबंद लगे हुए थे। दोनों बड़े लड़कों का कहीं पता नहीं था। बाहर की कोठरी में मुंशीजी औंधे मुँह होकर निश्चिंतता के साथ सो रहे थे, जैसे डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया-नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छंटनी न हुई हो और शाम को उनको काम की तलाश में कहीं जाना न हो।

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (17)

अथवा

तत्त्वों के आधार पर 'तीसरी कसम' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

3. 'वारिस' कहानी का सार लिखिए। (17)

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी के कथ्य को उद्घाटित कीजिए।

4. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (16)

अथवा

पारिवारिक मूल्यों के विघटन के रूप में 'वापसी' कहानी की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (10 + 10=20)

(क) 'घुसपैठिए' कहानी का मूल भाव।

(ख) हिरामन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ग) सिद्धेश्वरी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(घ) 'पंच परमेश्वर' कहानी का शिल्प।

s question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. ....

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19 2024

Question Paper : 618 G

que Paper Code : 2052101103

e of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

e of the Course : **B.A. (HONS.) Hindi**

ester : I

ation : 3 Hours

Maximum Marks : 90

के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

निम्नलिखित में से किन्हीं 'दो' की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(10+10=20)

(क) "राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन रात खंदकों में बैठे हड्डियां अकड़ गईं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा। और मेह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धंसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं, घंटे दो घंटे में कान के पर्दे फाड़ने वाले

P.T.O.

धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था। यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफ या कुहनी निकल गई तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

(ख) पत्र-संपादक अपनी शांति कुटी में बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतंत्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मंत्रिमंडल पर आक्रमण करता है। परन्तु ऐसे अवसर आते हैं, जब वह स्वयं मंत्रिमंडल में सम्मिलित होता है। मंडल के भवन में पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचारशील, कितनी न्याय-परायण हो जाती है। इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान हैद्य नवयुवक युवावस्था में कितना उद्दण्ड रहता है। माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल-कलंक समझते हैं; परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित- चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील, कैसा शांतचित्त हो जाता है। यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।'

(ग) शामनाथ सिगरेट मुहं में रखे सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पत्र-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं मैं नहीं चाहता कि उस बुढियां का यहाँ आना-जाना फिर

से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी से खाना खा के शाम को अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे, इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।

(घ) रमेश चौधरी से फोन पर यह समाचार पाकर राकेश भी गहरे अवसाद से भर गया था। उसे विश्वास ही नहीं हों रहा था कि इतनी कुशाग्र बुद्धि का सोनकर आत्महत्या कर सकता है। फोन पर रमेश की आक्रोशित आवाज सुन कर राकेश की उलझनें और ज़्यादा बढ़ गई थी। उसके काँपते हाथ में थमा फोन भी थरथरा गया था। बहुत मुश्किल से राकेश फोन क्रेडिल पर रख पाया था... राकेश ने स्वयं को संभालने का प्रयास किया। फिर भी उसे लग रहा था जैसे उसका हृदय डूब रहा है। वह धम्म से कुर्सी में धंस गया। उसके मुहं से अस्फुट शब्द निकले, "सोनकर यह क्यों किया तुमने...!"

2. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी का विश्लेषण कीजिए। (17)

अथवा

'पंच-परमेश्वर' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

3. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित मूल संवेदना की विवेचना कीजिए। (17)

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी आधुनिक सामाजिक मूल्यों में संक्रमण से उपजी मानसिकता की कहानी है।' स्पष्ट कीजिए।

4. 'वारिस कहानी' के आधार पर 'मास्टर जी' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (16)

अथवा

'वापसी कहानी' के कथ्य को उद्घाटित कीजिए। (10+10=20)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) 'जुम्मन शेख' का चरित्र-चित्रण

(ख) 'तीसरी कसम' कहानी की भाषा-शैली

(ग) 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार

(घ) 'घुसपैठिए' कहानी का शिल्प

27

[This question paper contains 2 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19 2024

Your Roll No. ....

Sr. No. of Question Paper : 542

Unique Paper Code	:	2052101102
Name of the Paper	:	Hindi Sahitya ka Itihas (Adikal Evam Madhyakal)
Name of the Course	:	**B.A. (Hons.) Hindi (DSC-2)**
Semester	:	I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य के इतिहास में नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिन्दी-साहित्येतिहास-लेखन की परम्परा का परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. आदिकाल के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए। (15

अथवा

आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश का वर्णन कीजिए।

3. ज्ञानाश्रयी काव्यधारा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

भक्ति आंदोलन और उसके अखिल भारतीय स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

4. रीतिकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

रीतिमुक्त और रीतिबद्ध काव्यधारा का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए : (10+10+10=30)

(क) रासोकाव्य

(ख) नाथ-साहित्य

(ग) जैन-साहित्य

(घ) राम काव्यधारा

(ङ) रीतिसिद्ध काव्य

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No. ....

Sr. No. of Question Paper : 5276 **G**

Unique Paper Code : 12051101

Name of the Paper : हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : I

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारोपीय भाषा परिवार का परिचय दीजिये।

अथवा

आदिकाल और मध्यकाल में हिंदी के क्रमिक विकास को स्पष्ट कीजिये। (14)

2. हिंदी भाषा की विभिन्न बोली वर्गों का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

P.T.O.

अथवा

हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ पर प्रकाश डालिए। (14)

3. भाषा के विकास में लिपि के महत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भाव लिपि और चित्र लिपि का विस्तृत परिचय दीजिये। (14)

4. देवनागरी लिपि के आरंभिक रूप का परिचय देते हुए उसके विकास का उल्लेख कीजिये।

अथवा

देवनागरी लिपि के गुणों एवं दोषों का विवेचन कीजिये। (14)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (6,6,7)

(क) लिपि की आवश्यकता

(ख) हरियाणवी

(ग) देवनागरी लिपि की सीमाएँ

(घ) पहाड़ी हिंदी वर्ग की बोलियाँ

(ङ) आधुनिक काल में हिंदी का विकास